JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का वर्त्तमान समय में उपयोगिता''

ANJU KUMARI

Research Scholar I.E.S. University, Bhopal (M.P.)

आधुनिकता के इस दौर में तकनीकी शिक्षा एवं प्रयोगात्मक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। प्रत्येक विद्यार्थी वर्त्तमान शिक्षा पद्धति के अनुसार कुछ तथ्यों, सिद्धान्तों एवं प्रयोगों को ही वास्तविक शिक्षा समझने लगे हैं। जीवन के सामाजिक जरूरतों की पूर्ति करने में वे जीवन के मूल को नजरअंदाज करते जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष दुर्बल होते जा रहे है। शिक्षा का सम्प्रत्यय यह है कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो। एक पक्ष के अभाव में दुसरे पक्ष को सबल नहीं बनाया जा सकता है। शिक्षा जीवन को फर्श से अर्श तक पहूँचाने का कार्य करती है। शिक्षा उस ज्योति या लौ के समान है, जो रोशनी फैलाती हैं।

शिक्षा दर्शन

भारतवर्ष के अनेकों विद्वानों ने हमें अपने शिक्षा पद्धति (दर्शन) का अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया है। उनमें से एक प्रकृति के प्रेमी गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर भी हैं। इन्होंने कहा है कि शिक्षा को प्रकृति तथा मनुष्य से निरन्तर सम्बन्धित होना चाहिए। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने स्वयं के प्रयासों से प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रकट हुए। यह उनके जीवन में अनुभव का आवश्यक परिणाम था। गुरूदेव प्रचलित शिक्षा पद्धति के घोर विरोधी थे क्योंकि यह पद्धति बालक को समय से पहले ही प्रकृति के गोद से छीनकर उसे कक्षा की चहारदीवारी में तथा कुछ वर्षों पश्चात् दफ्तर या फैक्ट्र में बन्द कर देती हैं। इनका मानना था कि सब कुछ समय से हो, ना पहले और न ही बाद में। टैगोर ने अपनी पुस्तक "Personality" में लिखा है ''सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।'' यहाँ सम्पूर्ण सृष्टि से टैगोर का अभिप्राय है – संसार की चर और अचर, जड़ और चेतन, सजीव और निर्जीव – सभी वस्तुएँ। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का कार्य है – हमें पूर्ण मनुष्यत्व (Complete Manhood) की स्थिति में पहुँचाना।

वर्त्तमान में विद्यार्थी शिक्षा के वास्तविक मूल में पहूँच ही नहीं पा रहे है, जिसके परिणामस्वरूप उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है। टैगोर ने शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत शिक्षा के प्राचीन

भारतीय आदर्शो को स्थान दिया है। यह आदर्श है – ''सा विद्या या विमुक्तये'' (Education is that which liberates) अर्थात् शिक्षा मुनष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उन्हें जीवन और मरण के चक्र से मुक्ति प्रदान करती है। मनुष्य आज आध्यात्मिक ज्ञान से हर पल दुर हो रहा है क्योंकि उसे आधुनिकता ने घेर रखा है। शिक्षा दर्शन आधुनिकता के प्रभाव को समाप्त कर मनुष्य को वास्तविकता से अवगत कराती है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन के कुछ आधारभुत सिद्धांत इस प्रकार है :–

1. इन्होंने बालक को उनके मातृभाषा में शिक्षा देने पर अत्यधिक बल दिया।
2. बालक को शिक्षा प्राप्त करते समय स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है।
3. बालकों में संगीत, चित्रकला और अभिनय की योग्यताओं का विकास किया जाना चाहिए।
4. छात्रों को भारतीय विचारधारा और भारतीय समाज की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।
5. छात्रों की शिक्षा नगरों के कोलाहल से दूर प्रकृति के गोद में होनी चाहिए।
6. पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन तथा सामाजिक आदर्शों को स्थान मिलना चाहिए।
7. शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए और उसे भारत के अतीत एवं भविष्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
8. शिक्षण – विधि का आधार जीवन, प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितियाँ होनी चाहिए।

उपरोक्त आधारभुत सिद्धान्तों के द्वारा टैगोर ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को स्पष्ट किया है कि शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षा देने में किन–किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना होता है। शिक्षा दर्शन के माध्यम से गुरूदेव ने शिक्षा के वास्तविक मूल तक पहूँचने का मार्ग बताया है। शिक्षा का वास्तविक मूल नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है लेकिन वर्त्तमान में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों में ही नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का अभाव प्रायः देखने को मिल रहा है। टैगोर ने चरित्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में अपनी दृष्टि केन्द्रित करते हुए उसे व्यक्तित्व निर्माण का सर्वोपरि साधन बतलाया है। उनका मानना है कि यदि मनुष्य का चरित्र उत्तम हो तथा उसमें कुछ विशेष करने की महत्वकांक्षा व लगन हो तो कुछ भी असम्भव नहीं है। वह सब कुछ बड़ी ही सहजता से अपने अधीन कर सकता है।

अज्ञानता में जकड़ी हुई मानवता को देखकर टैगोर का हृदय विकल हो उठा। जिसके परिणामस्वरूप वे शिक्षण कार्य के लिए प्रयासरत् हुए। गुरूदेव का शिक्षा जगत में ख्याति का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि इन्होंने केवल शिक्षा से सम्बन्धित सिद्धांतों की ही चर्चा नहीं की है वरन् सभी सिद्धांतों का व्यवहारिक रूप देने के लिए एक संस्था की स्थापना भी की, जिसे ''शांति निकेतन'' के नाम से जानते है। उन्होंने शांति निकेतन विद्यालय की स्थापना प्रकृति की गोद में की है, जहाँ पर बालक पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं। अब यह संस्था ''विश्व भारती'' के नाम से प्रसिद्ध है। टैगोर ने हमें पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त करने को ही सच्ची शिक्षा कहा है।

वर्तमान समय में उपयोगिता

आज विद्यार्थी केवल आर्थिक प्रगति को ही वास्तविक शिक्षा के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। जिससे वे शिक्षा के मूल उद्देश्य को नजरअंदाज करते जा रहे है। इसका प्रतिकुल प्रभाव हमारे परिवार, समाज एवं राष्ट्र पर

दिखाई दे रहा है। वर्तमान में देश के अधिकांश विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं लेकिन उनका मातृभाषा दुसरा हैं। जिससे वे शिक्षा के अनन्त मूल्यों को प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि वे विदेशी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्यार्थियों को अनन्त मूल्य प्राप्त करने के लिए अपने मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना होगा। छात्रों को शिक्षा देने के लिए गुरूकुल की तरह स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना होगा जिससे वे प्रकृति को सम्पूर्ण रूप से समझ सकें। आज शिक्षक को गुरू द्रोणाचार्य का नहीं अपितु गुरू वशिष्ठ, विश्वमित्र, समर्थ रामदास, दादा कोणदेव, रामकृष्ण परमहंस का आदर्श सम्मुख रखना होगा। यही शिक्षक का जीवन दर्शन है, जिसे अपने आचरण से प्रभावित करना होगा, वाणी से सार्थक करना होगा, कर्म से प्रकट करना होगा और ज्ञान से प्रकाशित करना होगा। इस प्रकार मूल्यों की शिक्षा देनी होगी क्योंकि मूल्य वे कसौटियाँ है जिनके आधार पर अच्छे–बुरे, सही–गलत, कारणीय और अकारणीय का निर्णय करने की क्षमता छात्रों में उत्पन्न होती है। पाठ्यक्रम में भारतीय दार्शनिकों के विचारों को शामिल करना होगा जिसके अध्ययन से छात्रों को जीवन के गुढ़ रहस्य को समझने में अत्यन्त सरलता होगी। वे जीवन के कठिन से कठिन दौर में भी सहज एवं सरल स्वभाव रखते हुए आगे बढ़ते जायेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बहुत से छात्र आत्महत्या जैसे कुकृत्य को अपना रहे है जिससे उनके परिवार के साथ–साथ समाज पर भी गलत प्रभाव पड़ रहा है। हमें ऐसे तनाव को दूर रखना होगा, जिसके लिए शिक्षा के मूल को सुक्ष्मता से समझना होगा।

उत्तम चरित्र का निर्माण करना होगा क्योंकि अधिकांश छात्र चारित्रिक रूप से मलिन होते जा रहे हैं। गुरूदेव के शिक्षा दर्शन के अन्तर्गत चरित्र निर्माण एक महत्वपूर्ण बिन्दू है। चरित्र अच्छा होगी तभी नैतिक रूप से छात्र सबल होगें, इसके अगले पड़ाव आध्यात्मिकता का भी विकास सम्भव हो सकेगा। आध्यात्मिकता का विकास ही हमारे जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए तभी हम पूरे जीवन में सामंजस्य स्थापित कर सकेंगे। हमें अपने शिक्षा के दृष्टिकोण को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें अपने देश के शिक्षाशास्त्रियों के विचारों का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करना होगा। जब तक हम केवल पश्चिमी शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धांतों का अनुसरण करेंगे तब तक हम पूर्ण मनुष्यत्व का विकास नहीं कर पायेंगे।

वर्त्तमान समय में अधिकांश शिक्षण संस्थान नगरों के बीचों बीच कोलाहल पूर्ण वातावरण में स्थित हैं। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि शिक्षण संस्थान कोलाहल पूर्ण वातावरण से दुर स्थापित किये जाए। जितना अधिक सम्भव हो इन समस्यों का समाधान शीघ्र किया जाए। शिक्षक एवं प्राध्यापक को अपने शिक्षण शैली में जीवन के वास्तविक परिस्थिति, प्रकृति का मूल स्वरूप एवं समाज की वास्तविक परिदृश्य या संस्कार को समावेश प्रदान करना होगा जिससे विद्यार्थी जीवन के वास्तविकता को समझ सकें, प्रकृति के गोद में स्वतंत्र रूप से ज्ञान प्राप्त कर सकें एवं समाज के सभी कार्यो एवं कठिनाईयों का अनुभव प्राप्त कर सकें।

निश्कर्श

छात्रों को चारित्रिक रूप से, नैतिक रूप से एवं आध्यात्मिक रूप से सबल बनाना ही शिक्षा दर्शन का मुख्य उद्देश्य हैं। छात्रों कों शिक्षा प्राप्त करने में पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना एवं सभी को उनके मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना भी शिक्षा दर्शन का उद्देश्य हैं। टैगोर ने अपने शिक्षा दर्शन के माध्यम से समाज, प्रकृति एवं विश्व में प्रेम स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की है। गुरूदेव चाहते थे कि शांत वातावरण एवं प्रकृति के गोद में ही बालकों को शिक्षा प्रदान किया जाये, जिससे वे स्वयं का पूर्ण स्वतंत्रता के साथ विकास कर सकें।

हमें इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना होगा। वर्त्तमान समय में विभिन्न भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के दार्शनिक विचारों एवं उनके शिक्षा दर्शन का अध्ययन एवं उसको कार्यान्वित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। जिससे विद्यार्थी शिक्षा के मुल उद्देश्य को प्राप्त कर सकें। मूल उद्देश्य को प्राप्त करने पर छात्रों में चारित्रिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास आसानी से हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सुची

1. पाठक एवं त्यागी – शिक्षा के सिद्धांत /प्रकाशक – श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2/ संस्करण – पच्चीसवाँ संशोधित संस्करण 2009 /ISBN-81-7457-001-2 / पृ0 सं0 – 254
2. शर्मा, डॉ.ओ.पी. – शिक्षा के दार्शनिक आधार/प्रकाशक – श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा – 2 /संस्करण – द्वितीय 2009 /ISBN-81-7457-395-X / पृ0 सं0 – 172
3. पाठक एवं त्यागी – शिक्षा के सिद्धान्त/प्रकाशक – श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा – 2/संस्करण – पच्चीसवाँ संशोधित संस्करण – 2009/ ISBN-81-7457-001-2 /पृ0 सं0 – 255
4. शर्मा, डॉ.ओ.पी. – शिक्षा के दार्शनिक आधार/प्रकाशक – श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा – 2/संस्करण – द्वितीय 2009 / ISBN-81-7457-395-X /पृ0 सं0 – 178
5. सक्सेना, एन0 आर0 स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त/प्रकाशक – विनय रखेजा C/o आर. लाल. बुक डिपो मेरठ – 250001 / संस्करण – 2008/पृ0 सं0 – 353
6. सक्सेना, एन0 आर0 स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त/प्रकाशक – विनय रखेजा C/o आर. लाल. बुक डिपो मेरठ – 250001 / संस्करण – 2008/पृ0 सं0 – 354
7- मदान, पुनम – गुप्ता, विजय – श्रीवास्तव, रोमा – शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य/प्रकाशक – अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2/संस्करण – 2016/17 / ISBN-978-93-85079-60-3/ पृ0 सं0 – 240